RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-01
January-2018
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

वर्ण धर्म : डॉ. राजेंद्र प्रसाद के परिपेक्ष में

इरफान अहमद
सह आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

डॉ राजेंद्र प्रसाद ने गीता में वर्णित वर्ण धर्म के सम्बन्ध में विचार करते हुए उसमें बहुत से दोष दिखाए हैं | धर्म शब्द के कई अर्थ है जिनमें मुख्य अर्थ स्वभाव, कर्तव्य और पंथ तीन कहे जा सकते हैं। गीता में इसका प्रयोग कर्तव्य के अर्थ में किया गया है, जैसा कि सब जानते हैं महाभारत का युद्ध आरंभ होने से पहले जब अर्जुन युद्ध क्षेत्र में पहुंचे तो वह सामने अपने सगे संबंधियों को देखकर विचलित हो गए और उन्होंने युद्ध करने से इंकार कर दिया । इस पर श्री कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध करने का उपदेश दिया उसमें उनकी मुख्य युक्ति यह थी कि युद्ध करना उसका धर्म है, क्योंकि वह क्षत्रिय वर्ण का है और क्षत्रिय वर्ण का होने से युद्ध करना उसका धर्म हो जाता है, इसके लिए उनकी युक्ति है कि क्योंकि छत्रिय का स्वभाव है कि वह युद्ध करें । वर्ण कृष्ण के अनुसार गुण स्वभाव के कर्म के अनुसार बनाए गए हैं और इन गुणों व स्वभाव के अनुसार ही वर्णों के धर्म निश्चित किए गए हैं।

इस पर डॉ प्रसाद की आपत्ति है कि आपत्ति है कि किसी का कोई स्वभाव है इससे यह आपादित नहीं होता है कि उसके अनुसार कर्म करना उसका कर्तव्य है वर्ण के अनुसार कर्तव्य स्वभाव जाट हो अथवा कहे कहे उसके अनुसार कर्तव्य स्वभाव से निर्धारित होते हैं । किंतु डॉक्टर प्रसाद का कहना है किस स्वभाव से तो एक कर्तव्य भी उत्पन्न होते हैं उदाहरण के रूप में युद्ध तो दुर्योधन भी कर रहा था और वह क्षत्रिय भी था किंतु उसका यह धर्म कर्तव्य कर्म नहीं था इसके समाधान के लिए गीता ने निष्काम कर निष्काम कर्म था अथवा निष्काम था की शर्त जोड़ी है किंतु निष्काम था डॉक्टर प्रसाद के अनुसार करता की मने स्थिति है उससे किसी कर्म की कर्तव्य था निर्धारित नहीं होती है । उदाहरण के लिए कोई पूर्ण निष्काम भाव से किसी के हत्या कर सकता है क्या किसी का अति भी कर सकता है निष्काम का से यह सिद्ध नहीं होता है कि गर्म उचित है या अनुचित भारतीय परंपरा में कर्म का औचित्य अनुचित या तो करता के स्वभाव से निर्धारित माना गया है या फिर उसके वर्ण धर्म के अनुसार इसी प्रकार वर्ण धर्म के द्वारा उसका कर्तव्य का निर्धारण किया जाता है अब या तो करता कि मैंने स्थिति से जैसे निष्काम ता से या फिर फल से जैसे असत्य बोलना ऐसी स्थिति में उचित माना गया है जब सत्य बोलने से करता को या अन्य किसी को हानि हो पुलिस स्टॉप किंतु उनके अनुसार यह तीनों ही गलत है क्योंकि तीनों कर्म की कर्तव्य था की कसौटी को कर्तव्य था से बाहर रख देते हैं और कर्तव्य को सापेक्ष बना देते हैं।

इस अध्याय का मुख्य विषय वर्ण धर्म का है और वर्ण का आधार मनुष्य का स्वभाव है और यह स्वभाव की उसका धर्म है। डॉक्टर प्रसाद का यह सारा विवेचन बड़ी भ्रांति पर आधारित है क्योंकि गीता के इस श्लोक की मे चार वर्णों की व्यवस्था गुण कर्म स्वभाव के अनुसार बनाई गई है, इसका यह अर्थ नहीं है कि इससे इन मुल्लों के कर्मों की कर्तव्य तभी निर्धारित हो जाती है , इसका अर्थ केवल यही है कि समाज में अनेक प्रकार के कर्म अपेक्षित होते हैं जैसे अध्ययन अध्यापन राज्य शासन व्यापार कृषि आदि और सेवा सहायता इन कर्मों को करने के लिए या इनके वर्गों का विभाजन समाज के लिए लाभप्रद होता है जब किस वर्ग में किसे रखा जाए यह उस व्यक्ति की योग्यता के अनुसार निर्धारित करने करते हैं तो विभाजन अधिक युक्तिसंगत होगा जन्म से यह निर्धारित या निर्धारण करना युक्तिसंगत नहीं होगा। तब जिस वर्ग के जो कर्म है उसके संवेग रीति से करना यह प्रत्येक व्यक्ति का धर्म बन जाएगा इसके विरोध में डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद गीता को एक श्लोक बताते हुए कहते हैं कि क्षत्रिय यदि ब्राह्मण का अवश्य का या शूद्र का कार्य करता है तो यह दोष है किंतु आवश्यक है की वह सही रूप से अपना कार्य करें और इस से उसका अर्थ ही नहीं बनता और इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यताएं समझ कर ही अपना व्यवसाय अपनाना चाहिए पुलिस टॉप बिना समझे व्यवसाय अपना लेने पर व्यक्ति असफल ही होगा लिस्ट ऑफ जैसे वाणिज्य का अयोग्य व्यक्ति यदि व्यापार करेगा तो असफल ही होगा। जैसे वर्ण धर्म का राजेंद्र प्रसाद जी ने यह अर्थ किया है कि अपने स्वभाव के अनुसार व्यक्ति जो भी काम करेगा वह उचित होगा एकदम भ्रामक है कर्म के उचित या अनुचित की कसौटी दूसरी व्यवस्था के माध्यम से बताई गई है जिसमें एक निष्काम ता है जिसे डॉक्टर प्रसाद ने जो कर्म को परिणाम से अलग कर और करता के भाव से अलग कर उसकी निरपेक्षता या उसकी कर्तव्य था उसके समकक्ष माना है कोमा उसके लिए उन्होंने कोई तर्क नहीं दिया पुलिस तो उन्होंने इसके लिए सत्य बोलने का उदाहरण दिया है कि भारतीय परंपरा में परिणाम बुरा होने पर सत्य बोलने की अनुमति देने की आलोचना इस आधार पर की है कि सत्य बोलने को प्रणाम सापेक्ष बना देगा और निरपेक्ष कि नहीं रहने देगा पुलिस टॉप किंतु उन्होंने यह नहीं बताया कि परिणाम बुरा निकलने पर परिस्थितियों हमें सत्य बोलना कैसे उचित होगा?

राजेंद्र प्रसाद जी की सबसे बड़ी भ्रांति गीता को नीतिशास्त्र के ग्रंथ के रूप में देखने में है गीता एक दार्शनिक काव्य नीति दर्शन का ग्रंथ नहीं है और इसका विषय जीवन का प्रमाणित है तो कर्म की बात साधारण कर्म के स्तर पर नहीं करती कामा कर्म के स्तर पर योग के स्तर पर करती है और योग उनके अनुसार तीन प्रकार के होते हैं पहला कर्म योग ज्ञान योग तथा भक्ति योग ।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

निष्काम कर्म इसके बारे में डॉक्टर प्रसाद ने युद्ध भूमि के दृश्य का वर्णन आत्मा की अमरता सब कुछ का पूर्व निर्धारित होने पर नियतिवाद आदि इन सबको निष्काम कर्म के साथ में संबंधित किया है पुलिस टॉप अपने कर्म को कर्तव्य मानते हुए करना और इसके साथ में निष्काम कर्म की अवधारणा को जोड़ना व आकांक्षा रहित कर यही मोक्ष का साधन है। इस कर्म का कोई अच्छा या बुरा प्रभाव नहीं होता करता जन्म मृत्यु के चक्र से परे हो जाता है इसी भाव से प्रेरित होकर श्री कृष्ण अर्जुन को युद्ध करने के लिए प्रेरित करते हैं कि यदि युद्ध निष्काम भाव से किया जाए तो वह युद्ध धर्म युद्ध कहलाता है पुलिस टॉप अर्जुन श्री कृष्ण के समक्ष रखते हैं तब श्रीकृष्ण को से समझाते हुए कहते हैं कि उसका कर्म क्या है? अर्जुन व कृष्ण के संवाद को भगवत गीता कहा जाता है अर्जुन का मानना है कि युद्ध करना अनैतिक है कृष्ण से समझाते है कि यह अनैतिक नहीं है बल्कि अपने कर्तव्य का पालन नहीं करना नैतिक है और अधर्म पुलिस का युद्ध करना उसका स्वाभाविक धर्म है तब अर्जुन सहमत हो जाते हैं और इस तरह से कृष्ण उसके साथ ही नहीं रहते बल्कि उसकी नैतिक गुरु भी हो जाते हैं पुलिस टॉप कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया उस निष्काम कर्म का अर्थ है कर्म के फल के अनुकूल या प्रतिकूल होने पर प्रस्ताव नहीं होना इसका अर्थ यह नहीं है कि कर्म को फल के विचार के बिना किसी उद्देश्य के बिना करना पुलिस थाना से जन्म मरण में से मुक्ति की बात कही गई है। इसके पीछे सिद्धांत यह है कि कामनाएं संसार से जोड़ती है तथा इनसे मुक्ति संसार से तोड़ दी है पुलिस डॉक्टर प्रसाद आपत्ति उठाते हुए कहते हैं कि निष्काम कर्म क्योंकि बंधनकारक रुको सेवर संस्कारों से उत्पन्न नहीं होते हैं जबकि काम करो प्रभाव को उत्पन्न करता है पुलिस टॉप यह प्रश्न ना कृष्ण ने उठाया ना अर्जुन ने ना भारतीय परंपरा में किसी और ने तब इसके संतोष सेना के असंतोष की बात किस प्रकार की जा सकती है गीता में कहा गया है कि काम व्यक्ति के लिए कोई कर्म कर्तव्य कर्तव्य नहीं रह जाता है किंतु तब भी लोक संग्रह के लिए कर्म करना चाहिए पुलिस टॉप इस पर डॉ राजेंद्र प्रसाद कहते हैं कि इसका अर्थ है कि ऐसा व्यक्ति लोक संग्रह की कामना से कर्म करता है किंतु से इस कामना से भी रहित होना चाहिए पुलिस आगे कहते हैं कि किसी लाभ के पात्र के प्रति उसे लाभ पहुंचाने की निस्वार्थ भाव या कामना से किया गया कर्म इस कामना सहित किए गए कम से कम अच्छा है या नहीं स्पष्ट नहीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गीता रहस्य कर्मयोग शास्त्र : लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
2. Bandyopodhayaya, Jayantanuja., Social and Political Thought of Gandhi, Allied Publishers,Bombay, 1969.
3. Bhattacharya, Buddhadeva., Evolution of Political Thought of Gandhi, Calcutta Book House, Calcutta, 1969.
4. Bose, N. K., Selections from Gandhi, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1959.
5. Dhawan, Gopi Nath., The Political Philosophy of Mahatma Gandhi, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1962.
6. Gandhi, M.K., An Autobiography or The Story of My Experiments with Truth, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1927.
7. Gandhi, M. K., Removal of Untouchability, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1959.
8. Ghurye, G. S., Caste and Race in Inda, Kegan Paul, London, 1932.
9. Harijan, A Journal of Applied Gandhism, 1933-1955, New York and London: Garland Publishing Inc.), 1973

© RRIJM 2015, All Rights Reserved